मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- मंत्री कृष्णपाल के घर पर छात्रों का प्रदर्शन
- राजमार्ग को लेकर छुटभैये कांग्रेसियों का 'विरोध प्रदर्शन' — 3

- यूपी चुनाव : गाय, दंगा और दलित
- आत्म मुग्धता — 4

- गौरक्षक गुंडों को अब मिलेगा सरकारी आई कार्ड
- कश्मीर: क्यों टकरा रहे हैं बेबस पत्थर बंदूकों से — 5

- आरएसएस के पेट से पैदा होते हैं पीएम और सीएम
- एसएचओ सराय केवल लूटमार के लिये बना है — 8

वर्ष 29 अंक 19 फरीदाबाद, मंगलवार 16-31 अगस्त 2016 फोन : - 9999595632 2 ₹

गौभक्तों और दलितों के बीच बुरे फ़ंसे मोदी:उल्टी गिनती शुरू

न काम आयेगी तिरंगे की आड़ न पीओके की बाड़-यूं चिपटा गैय्या का हाड़

लालकिले से चाहे कितना भी दहाड़ लें मोदी, आवाज में टांय-टांय फ़िस्स की ध्वनि ही ज़्यादा गूंजती है। दूसरे शब्दों में कभी भाजपा के खेवनहार बने नरेन्द्र मोदी की उल्टी गिनती शुरु हो गयी है। आज मोदी सरकार का हाल भी भाजपा की वाजपेयी सरकार जैसा ही हो चला है। संघ राष्ट्रवाद और कार्पोरेट राष्ट्रवाद दोनों नावों में सवारी को सन्तुलित करते-करते वाजपेयी सरकार 2004 का चुनाव हार गयी थी। तब बतौर प्रधानमंत्री वाजपेयी के सामने गुजरात में 2002 में हुए मुस्लिम नरसंहार के मुख्य जवाबदेह मुख्यमंत्री मोदी को बर्खास्त करने की चुनौती थी, जिसका सामना करने में वे असफ़ल सिद्ध हुए और अपना राज गंवा बैठे। आज प्रधानमंत्री मोदी के सामने भागवत, तोगड़िया, मनोहर लाल खट्टर, देवेन्द्र फ़डनवीस जैसे गौ भक्तों/ मुस्लिमद्रोहियों की वैसी ही चुनौती है, जिससे पार पाना मोदी के बस का नहीं लगता।

मोदी : निपटा दूंगा

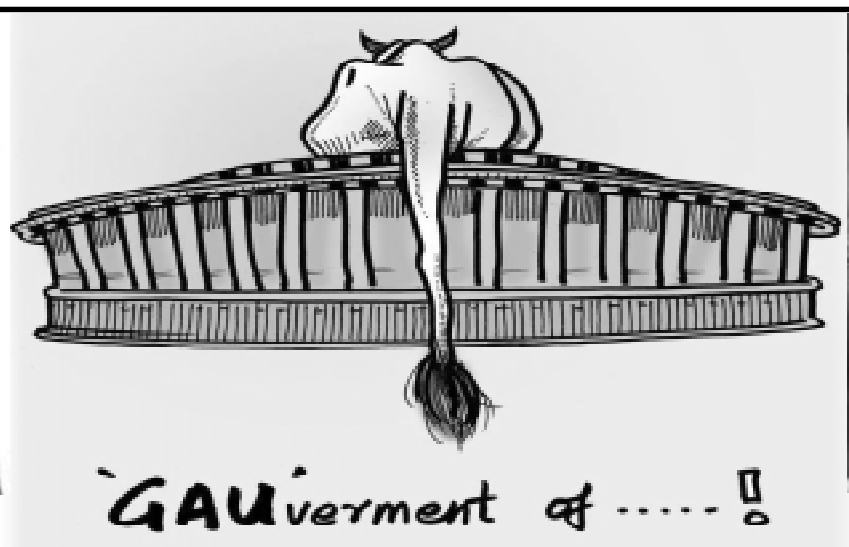

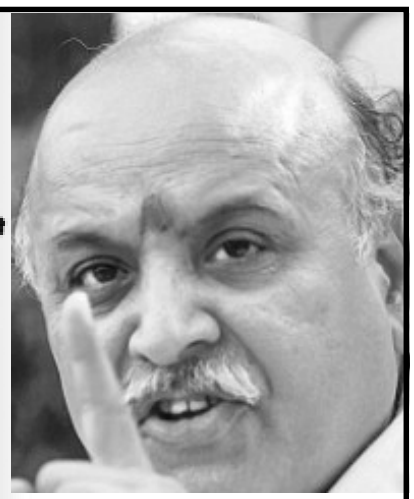

परवीन तोगड़िया : देख लूंगा

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

मोदी सरकार का भी एक सूत्री एजेंडा कार्पोरेट जगत की सेवा करना है। पूर्ववर्ती कांग्रेसी सरकारों से भी बढ़-चढ़ कर वे तमाम कानूनी-गैर कानूनी हथकंडे अपना कर कार्पोरेट लूट को संभव बना रहे हैं। छत्तीसगढ-झारखंड जैसे खनिज समृद्ध प्रदेशों में केन्द्रीय सशस्त्र बलों को उतार कर आदिवासी/वनवासी स्मिता को रौंदा जा रहा है। काशमीर और उत्तर-पूर्व में स्थानीय आकांक्षाओं को सेना लगा कर कुचला जा रहा है। बाकी देश में आम जनता का शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार बजट जम कर कटौती का शिकार हुआ है। स्वच्छ पानी और पीपीपी स्वास्थ्य मॉडल के नाम पर हज़ारों लाखों करोड़ का आबंटन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के फ़ायदे में किया जा रहा है।

इस सबसे 'बेखबर' संघी राष्ट्रवाद ने गौभक्तों के जत्थे के बाद जत्थे देश की जनता को नोचने के लिये उतार रखे हैं। यहां तक कि मोदी को भी कहना पड़ा कि 80 प्रतिशत गौभक्त जरायमपेशा व ठग्गीमार लोग हैं। हलांकि तब से किसी भी भाजपाई राज्य सरकार ने इनमें से एक भी गौभक्त जेल में नहीं डाला है। यानी जो कुछ हो रहा है, भाजपाई सरकारों की मर्जी से ही।

हिन्दुत्व के अखाड़े में मोदी का पुराना प्रतिद्वंद्वी प्रवीण तोगड़िया तो सरेआम ताल ठोक कर मैदान में उतर आया है। मोदी के लिये गौभक्त को न निगलना संभव हो रहा है न उगलना। 2014 लोकसभा चुनाव में इन्होंने मोदी को वोट इसी लिये तो दिया था कि इन्हें दलितों व मुसलमानों की ऐसी तैसी करने की छूट मिले। मोदी ने भी काफ़ी दिन आंखे मूंदे रखीं पर अब सिर पर उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब के चुनाव जीवन-मरण का प्रश्न बन कर सामने आ खड़े हुए हैं।

कार्पोरेट लॉबी का बढ़ता दबाव भी अपनी रंगत दिखा रहा है। ज्यों-ज्यों लूट में उनकी छूट बढती जा रही है, आम आदमी महंगाई और बेरोजगारी के बढते भार के नीचे बिलबिला रहा है। कार्पोरेट जगत को गौभक्त भी एक सीमा तक ही रास आ सकते हैं। गौभक्तों की कारगुजारियों से मोदी की अपनी अन्तर्राष्ट्रीय दौरों की 'साख' भी मिट्टी में मिलती जा रही हैं। इस खींचतान का शिकार बने मोदी के मुंह से हास्यास्पद बयानों की फुलझड़ी फूट रही है। 'मुझे गोली मारो लेकिन मेरे दलित भाइयों को कुछ न कहो,' 'गौभक्तों का डोज़ियर तैयार किया जाय,' 'काशमीर में एकमात्र समस्या पीओके (पाकिस्तानी कब्ज़े वाला काशमीर)की है,' 'देशभर को डायलिसिस पर डालने के लिये सरकारी अस्पतालों में पीपीपी मॉडल द्वारा सेवायें दी जायेंगी'।

जनजागृति का जमीनी अंधड़ मोदी की सारी भाषणकला को तिनके की तरह उड़ाने का नज़ारा पेश कर रहा है। दलित, अल्पसंख्यक बेरोजगार और स्त्रीशक्ति पूरी तरह मोदी से विमुख है। यदि किसी चमत्कारवश संघी राष्ट्रवाद और कार्पोरेट राष्ट्रवाद की शक्तियां एक जुट भी हो जायें तो भी मोदी का सूर्यास्त वैसे ही आसन्न है जैसे पानी के बुलबुले का फूटना।

ख़बर दार

गाय मोदी की, भगत तोगड़िया के

हिन्दुओं में चुनावी एकता लाने का सपना आरएसएस, राष्ट्रीय सवयं सेवक संघ बहुत दिनों से देखता आ रहा हैं इसके लिए वे कभी मुसलमानों वे ईसाईयों को कभी पाकिसतान को और कभी गाय को अपनी चिन्ता का केन्द्र बनाते आये हैं। संघ के मोहरों के रूप में नरेन्द्र मोदी और प्रवीण तोगड़िया गाहे बगाहे इन मुद्दों को खड़ा करने में महारत दिखाते रहे हैं। दोनों गुजरातियों में परस्पर स्पर्धा और ईर्ष्या भी कूट-कूट कर भरी हुई है तथा वे एक दूसरे को नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। हिन्दू एकता के नाम पर लोगों को बांटने का खेल दोनों को बखूबी आता है। राजनीति में बहुत आगे निकल चुके मोदी ने जैसे ही तथाकथित गौभक्तों को फटकारा, तोगड़िया ने इन गौभक्तों के समर्थन में हल्ला बोल दिया। इस काल्पनिक साक्षात्कार में तोगड़िया ने अपने और मोदी के मतभेदों पर चर्चा की है।

म.मो-पीएम के रूप में मोदी ने अगर गौभक्तों की गुंडागर्दी की निन्दा की है तो आपको इस पर एतराज क्यों?

तोगड़िया- क्यों न हो, गुंडागर्दी तो हमारा पेशा है, उसकी निंदा क्या करनी। और उस पर भला किसी को एतराज भी क्यों हो? कम से कम मोदी जी और मुझ जैसों को तो एतराज नहीं ही हो सकता। आखिरकार गौभक्तों ने गुंडागर्दी का यह हुनर हमारी शाखाओं में ही तो सीखा है।

म.मो.-यदि ऐसा है तो आपको तो मोदी जी की तारीफ करनी चाहिए कि उन्होंने उन गुंडों की गुंडई का संज्ञान लिया। फिर आपने उनके ब्यान पर कड़ी आपत्ति क्यों जताई है?

तोगड़िया-मेरी आपत्ति गौ भक्तों को गुंडा कहने पर नहीं है। मेरी आपत्ति तो इस बात पर है कि मोदी जी ने इन्हें असमाजिक कहा। क्या मोदी जी नहीं जानते कि गौभक्तो की समाजिकता क्या होती है? क्या उन्हें नहीं पता कि गोभक्तों की सामाजिकता में मुसलमानों और दलितों को अपमानित व उत्पीड़ित करना शामिल है। इसी मूलमंत्र से हम सदियों से हिन्दुओं को एकजुट करते आये हैं। मोदी जी स्वयं भी इन बातों में शामिल रहे हैं।

म.मो.-लेकिन अब तो मोदी जी का कहना है कि दलितों को अपमानित उत्पीड़ित करने का मतलब हिन्दुओं को बांटना है। उन्होंने अपील की है कि बेशक उन्हें गोली मार दो पर दलितों को कुछ मत कहो।

तोगड़िया-मोदी जी यही तो गलती कर रहे है। हमने हमेशा दूसरों को मारपीट कर ही तो हिन्दू एकता कायम की है। कभी मुसलमानों को मारा पीटा, कभी ईसाईयों को और कभी सिखो व दलितों को। यह ठोका-बजाया रास्ता भला हम कैसे छोड़ दे?

म.मो.-यानि हिन्दुओं की चुनावी एकता का और कोई तरीका नहीं हो सकता?

तोगड़िया- भला कैसे हो सकता है? हिन्दुओं में अमीर और गरीब हैं, शोषक और शोषित है, सरमायेदार और श्रमिक हैं, किसान और महाजन हैं, व्यापारी और उपभोगता हैं वगैरह-वगैरह। जाहिर है सबके हित एक दूसरे के विपरीत हैं, ऐसे में भला एकता कैसे संभव है? तुम देखना देर सवेर मोदी जी को भी हमारे रास्ते पर ही आना पड़ेगा। अमित शाह वगैरह उन्हें ज्यादा भटकने नहीं देंगे।

वही लाल किला वही मोदी वही लतरानियाँ.....

70वें वर्ष में भी लाल किले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री मोदी के मुंह से सरकारी चंडूखाने की वही घिसी-पिटी लतरानियां सुनने को मिलीं ! मोदी ने भाषण में अपनी सरकार के गति से काम करने का दावा कई बार किया। इसकी कलई खोलने के लिए यहाँ एक ही उदाहरण काफी होगा।

चार वर्ष पहले निर्भया काण्ड के बाद सरकार ने वर्मा कमीशन की सिफारिश पर देश भर में सिंगल पॉइंट रेप क्राइसिस सेंटर बनाने का फैसला लिया था। भावना यह थी कि बलात्कार पीड़ित को जगह-जगह धक्के न खाने पड़े और उसे तुरंत एक ही स्थान पर मेडिकल उपचार, कानूनी सहायता, मनोवैज्ञानिक परामर्श, आर्थिक सहयोग, सामाजिक सशक्तीकरण जैसी तमाम सुविधाएँ दी जा सकें। होना तो यह चाहिए था कि पीड़ित का घर ही स्वत: रेप क्राइसिस सेंटर में बदल जाता जहाँ जाकर डॉक्टर, पुलिस, मैजिस्ट्रेट, जज, मनोचिकित्सक, परामर्शदाता, आर्थिक-सामाजिक प्रदाता अपना-अपना योगदान पहुंचाने के जिम्मेदार होते। लेकिन इतना सुगम कदम उठाना देश के शासन-प्रशासन के बस में कहां ?

अब, चार वर्ष बीत जाने के बाद, मोदी सरकार हर प्रदेश में एक, जी हां समूचे प्रदेश में महज एक, ऐसा सेंटर बनाने के लिए फण्ड देने जा रही है। जाहिर है अगले 4-5 वर्ष में जाकर इमारत खड़ी होगी और फिर उसमे नियुक्तियां की जायेंगी। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य की कल्पना कीजिये जहाँ बुलंदशहर और बलिया से बलात्कार पीड़ित को सैकड़ों किलोमीटर दूर लखनऊ स्थित सेंटर के चक्कर काटने होंगे। क्या यह पीड़ित के लिए एक और बलात्कार जैसी यातना वाला ही अनुभव सिद्ध नहीं होगा ?

मोदी शासन के गति पकड़ने का तो पता नहीं पर उसके भी हाथों पीड़ित की जो गति हो रही है वह तो स्पष्ट है !